बानी जगरानी की उदारता बखानी जाय,
ऐसी मति कहौ धौं उदार कौन की भई।
देवता प्रसिद्ध सिद्ध ऋषिराज तपवृद्ध,
कहि कहि हारे सब कहि न केहूँ लई।
भावी भूत वर्तमान जगत् बखानत है,
केसौदास केहू ना बखानी काहू पै गई।
बरन पति चार मुख भूत बरन पाँच मुख,
नाती बरनैं षटमुख तदपि नई नई॥2॥

शब्दार्थ—बानी = वाणी, सरस्वती। मति = बुद्धि। तपवृद्ध = बड़े-बड़े तपस्वी। भावी = भविष्यत। भूत = बीता हुआ। बरनैं = वर्णन करता है। पति = सरस्वती।

पति = ब्रह्मा। पूत = सरस्वती-पुत्र शिव। नाती = सरस्वती का धेवता कार्त्तिकेय। तदपि = तथापि, तो भी।

प्रसंग—कवि केशवदास सरस्वती की महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि इनमें जो उदारता है, उसका किसी भी प्रकार वर्णन नहीं किया जा सकता।

व्याख्या—जो जगत् की रानी सरस्वती की उदारता का वर्णन कर सके, ऐसी उदार-बुद्धि, बताओ, किसकी हुई है? अर्थात् इस संसार में किसी को भी ऐसी उदार बुद्धि नहीं मिली जो सरस्वती की उदारता का वर्णन कर सके। प्रसिद्ध देवता, सिद्ध, ऋषिराज और बड़े-बड़े तपस्वी इनकी उदारता का वर्णन करते-करते थक गये, किन्तु किसी से भी उनका वर्णन नहीं हुआ। भविष्यत काल में भी लोग इस उदारता का वर्णन करेंगे, भूतकाल में भी किया है और उनका मान काल में भी हो रहा है, किन्तु, केशवदास कहते हैं कि फिर भी उनका वर्णन नहीं हो सका है। इनकी उदारता का वर्णन इनके पति ब्रह्मा अपने चारों मुखों से, पुत्र शिव पाँचों मुखों से और नाती कार्त्तिकेय छहों मुखों से करते हैं, तो भी उनमें नित नवीनता रह जाती है; अर्थात वे भी सरस्वती की उदारता का वर्णन नहीं कर पाते।

विशेष—1. सरस्वती की वर्णनातीत उदारता का वर्णन प्रभावोत्पादक एवं सफल है।

2. 'कहौं' शब्द का प्रयोग कवि के आत्म-विश्वास का द्योतक होने के कारण अत्यन्त भावाभिव्यंजक है।

3. 'तदपि नई नई' इस पदांश का भाव माघ कवि की इस पंक्ति के समान है—

'क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः।'

4. समस्त छंद में व्याप्त विवशता का वर्णन महाकवि बिहारी की इस विवशता से साम्य रखता है—

'लिखन बैठि जाके सबी, गहि गहि गरब गरूर।
भये न केते जगत के, चतुर चितेरे कूर।।'

—बिहारी, बोधिनी, दोहा 165

तुलना—अनेक कवियों और आचार्यों ने सरस्वती की वंदना की है। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं—

1. **चतुर्मुखमुखाम्भेजवनहंसवधूर्मम।**
मानसे रमतां नित्यं सर्वशुक्ला सरस्वती।।

अर्थात् जो सरस्वती ब्रह्मा के मुख कमल-समूह में सदैव निवास करने के कारण निर्दोष है, वह सदैव मेरे हृदय में रमण करे। —काव्यादर्श, 1-1

2. **नियतिकृतनियमरहितां ह्लादैकमयीमनन्यपरतन्त्राम्।**
नवरसरुचिरां निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति।।

अर्थात्—कवि की उस वाणी—सरस्वती-की जय हो जो रूपरेखा नियति के नियन्त्रण से सर्वथा उन्मुक्त, एकमात्र आनन्दमय, अपने अतिरिक्त अन्य समस्त

कारण-कलाप की अधीनता से परे, वस्तुतः अलौकिक रस से भरी और अत्यन्त मनोहर होती है। —काव्यप्रकाश, 1-1

3. शरदिन्दुसुन्दररुचिश्चेतसि सा मे गिरां देवी।
अपहृत्य तमः सन्ततमर्थानखिलान्प्रकाशयतु।।

अर्थात्—शरदकालीन चन्द्रमा की कांति से भी अधिक कांतिवाली वाग्देवी सरस्वती हमारे हृदय के अज्ञानान्धकार को दूर करती रहे और उसमें समस्त अर्थ-तत्वों को प्रकाशित करती रहे। —साहित्य-दर्पण, 1-1

4. उच्चैरस्यति मन्दतामरसतां जाग्रत्कलंकैरव
ध्वंसं हस्तयते च या सुमनसामुल्लासिनां मानसे।
दुष्टोद्यन्मदनाशनार्चिरमला लोकत्रयीदर्शिका
सा नेत्रत्रितयीव खण्डपरशोवग्दिवता दीव्यंतु।।

अर्थात्—जो सरस्वती मूर्खता, आलस्य और नीरसता को दूर करती है, सदोष वचन होने की आशंका से उत्पन्न हुई मूकता का विनाश करती है, पंडितजनों के अन्तःकरण को प्रफुल्लित करती है; उत्पन्न हुए दुष्ट गर्व का नाश करती है और अपनी कांति से तीनों लोकों की दर्शिका हैं; वह सरस्वती भगवान् शंकर की नेत्रमयी के समान विद्वज्जनों के हृदय में प्रकाश करे। —चन्द्रालोक, 1-1

यदि इन स्तुतियों की केशव द्वारा की गई उपर्युक्त स्तुति से तुलना की जाये तो कहा जा सकता है कि केशव की स्तुति में अपेक्षाकृत अधिक भावमयता है।

अलंकार—अनुप्रास, सम्बन्धातिशयोक्ति, यमक, पुनरूक्तिप्रकाश।